स्त्री मुक्ति एवं सुधार के आधारस्तंभ

डॉ.सरवदे प्रदीप रेवाप्पा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,
बारामती ता.बारामती, जि.पुणे.
भ्रमणभाष : ९९२३६०११०८
Email Id : pradipsarvade@gmail.com

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्के तत्र देवताः ।
यत्रैतात्सु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियः ।।''

''अर्थात जहाँ स्त्रियों की पूजा होती हैं, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नहीं होती हैं, वहाँ किए गए समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते है ।'' मनुस्मृति में कहे गए उस श्लोक के आधार पर भारतीय समाज में नारियों को ऊँचा स्थान दिया गया है, ऐसा माना जाता है । लेकिन वास्तविकता इसके बिलकुल विपरीत थी । इसी मनुस्मृति में ही नारी को शूद्र माना गया था, जिसके कारण भारतीय समाज में उसे पुरूषों से निचला स्थान दिया गया था । उसे केवल वस्तु मात्र समझा गया था । उसे शिक्षा, संपत्ति, सम्मान आदि कुछ भी पाने का कोई अधिकार नहीं था । उसे शूद्र मानने के कारण व शूद्रों की तरह शोषित और पीडित थी । वह पुरूष वर्चस्व की दासता में अपना संपूर्ण जीवन गुलामों की तरह जीने के लिए अभिशप्त थी । वह केवल भोग विलास का साधन मात्र रह गयी थी । चाहे वह स्त्री सवर्ण हो या शूद्र, उसे समाज में किसी प्रकार का महत्वपूर्ण स्थान नहीं था । रूढिगत अंधःविश्वास, अशिक्षा, सती प्रथा, बाल विवाह, जातिगत विवाह, बहु पत्नी विवाह जैसी परंपराओं में जकडी नारी को बंधनों से मुक्त कर उसको अपने अस्तित्व की पहचान देने का महान कार्य महात्मा गौतम बुद्ध, महात्मा जोतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जैसे महापुरूषों ने किया ।

युग-युग के बंधनों में जखडी इस नारी को पुरूष दासता से मुक्त करने का सबसे पहला प्रयास महात्मा गौतम बुद्ध ने किया । ढाई हजार वर्ष पूर्व स्त्रियों के समस्त शोषण के विरूद्ध विद्रोह करनेवाले, स्त्री मुक्ति के अग्रदूत थे - सिध्दार्थ गौतम बुद्ध । उन्होंने स्त्रियों को समाज में पहली बार प्रतिष्ठा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया । जिस समय में स्त्रियों को संन्यास लेने का तथा ज्ञानार्जन करने का अधिकार नही था, ऐसे समय में महात्मा बुद्ध ने उन्हें अपने धम्म में दीक्षा देने का क्रांतिकारी कार्य किया । उन्होंने अपने संघ में सभी जाति, धर्म की स्त्रियों को प्रवेश दिया । उनके इस महान कार्य से स्त्रियों को गुलामी से मुक्त कर उनके जीवन में क्रांति लाने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया गया । भगवान बुद्ध स्त्री-पुरूष समानता के समर्थक थे । वे अपने शिष्य आनंद से कहते हैं कि, ''आनंद, निब्बाण की अवस्था तक पहुँचने में पुरूषों के समान स्त्रियाँ भी उती ही समर्थ हैं, ऐसा मेरा मत है । स्त्री-पुरूष विषमता का मैं

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI
Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

समर्थक नहीं हूँ ।'' इस तरह भगवान बुद्ध ने स्त्रियों को स्वतंत्रता, समता तथा सम्मान पूर्वक जीवन जीने का अधिकार देने का अभूतपूर्व कार्य किया था ।

महात्मा गौतम बुद्ध के पश्चात आधुनिक भारत में स्त्री स्वतंत्रता के सच्चे समर्थक थे - महात्मा जोतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले । उन्होंने जाति तथा धर्म के नाम पर चलनेवाली मिथ्या परंपरा और उस परंपरी की दासता में गुलामों जैसा जीवन जीनेवाली अभिशप्त स्त्रियों को मुक्त करने का महान कार्य किया । महात्मा जोतिबा फुले जी के क्रांतिकारी विचारों ने भारतीय सामाजिक इतिहास की नींव हिला दी । उनकी प्रेरणा तथा मेहनत से नारी शक्ति को गरीमा प्रदान की है । १ जनवरी, १८४८ में पूना के बुधवार पेठ में लडकियों के लिए पहला स्कूल खोला और १५ मई को कन्या पाठशाला की स्थापना की गई । कन्या पाठशाला में पढाने के लिए कोई भी महिला अध्यापक न मिलने पर उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को पढाया । उनके इस कार्य में सावित्रीबाई फुले जी ने भी उनका साथ दिया। इस तरह भारत में पहली स्त्री अध्यापिका होने का गौरव सावित्रीबाई फुले जी को प्राप्त हुआ ।[४] शिक्षा तत्कालीन समाज में जाति तथा धर्म के नाम पर चलनेवाली मिथ्या परंपरा को ही भारतीय समाज की सच्ची संस्कृति मानने वालों ने इन पति-पत्नी के समाज सुधार कार्य में कई कठिनाइयाँ निर्माण की । स्कूल में लडकियों को पढाने के लिए जानेवाली सावित्रीबाई जी पर गोबर तथा कीचड फेंक कर उन्हें अपमानित किया गया । फिर भी सावित्रीबाई जी ने हार नहीं मानी । इन सभी कठिनाइयों का सामना कर इन दोंनों ने सभी धर्म तथा जाति की स्त्रियों के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिए । महात्मा जोतिबा फुले जी ने लगभग १८ विद्यालयों की स्थापना कर, वे भारत में स्त्री शिक्षा आंदोलन के सूत्रधार बने । इनके इस क्रांतिकारी आंदोलन में उनकी पत्नी सावित्रीबाई जी का बहुत बडा योगदान रहा । अपनी पत्नी के महान योगदान के संबंध में ज्योतिबा कहते है - ''अपने जीवन में मैं जो भी कर पाया हूँ, वह मेरी पत्नी सावित्रीबाई के सहयोग से ही हो सका है । वे काँटों भरे रास्तों में भी मेरे साथ कदम से कदम मिलाकर चलती रही।''[५] फुले दंपति के कारण ही आज महिलाएँ शिक्षित हुई, आत्मनिर्भर होकर समता एवं सम्मान की अधिकारिणी बन गई हैं ।

भगवान गौतम बुद्ध से शुरू हुआ स्त्री मुक्ति का आंदोलन महात्मा फुले और सावित्रीबाई फुले जी के पश्चात डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने अधिक गतिशिल बनाया । उन्होंने स्त्रियों में स्वाभिमान की भानवा को जगाकर अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने के लिए प्रेरित किया । उनकी प्रेरणा से ही दलित स्त्रियों में आत्मतेज उभर आया, जिसके कारण उनके हर सामाजिक आंदोलनों में वे पुरूषों के आगे रही हुई दिखाई देती है । डॉ.आंबेडकर स्त्री-पुरूष समानता के पक्षधर थे । वे समाज की उन्नति के लिए स्त्रियों की उन्नती को महत्व देते थे । इस संबंध में वे कहते है, ''मैं किसी समाज की प्रगति का अनुमान इस बात से लगता हूँ कि उस समाज की स्त्रियों की कितनी प्रगति हुई है ।''[६] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI
Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

बाबासाहब स्त्रियों की उन्नति पर अधिक बल देते थे । इसीलिए उन्होंने स्त्रियों की उन्नति करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । वे जानते थे कि दलितों की तरह नारी शोषण को भी एकमात्र कारण है - अज्ञान । इस अज्ञान को दूर करने के लिए वे नारी शिक्षा को महत्त्वपूर्ण मानते थे । यदि स्त्री शिक्षित हो जाती है तो उसके साथ उसका परिवार, समाज तथा देश का भी विकास हो सकता है । इसलिए वे अपने भाषण में लडकियों को शिक्षा देने के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं कि, ''आपको अपनी लडकियों को शिक्षा देनी चाहिए।'' ज्ञान और विद्‌या यह केवल पुरूषों के लिए ही नहीं है, बल्कि स्त्रियों के लिए भी उसकी आवश्यकता है । यदि अपनी आनेवाली पीढी में सुधार चाहते हैं, तो आपको अपनी लडकियों को पढाना चाहिए।''[७]

डॉ. आंबेडकर जी ने नारी उत्थान की दृष्टि से ही सन् १९३९ में हिंदू कोड बिल की स्थापना की थी । यह बिल हिंदू धर्म की सभी जाति की स्त्रियों के लिए उन्नति का मार्ग था । लेकिन इस बिल को पारित नहीं किया गया । इससे दुःखी होकर उन्होंने अपने कानून मंत्री पद का इस्तीफा दे दिया था । फिर भी उन्होंने संविधान में स्त्रियों के लिए शिक्षा, संपत्ति, विवाह, तलाक आदि कई प्रकार के अधिकारों का प्रावधान रखा है, जिसके कारण आज समाज में नारी का विकास हुआ है ।

स्त्रियों में भी दलित स्त्री अधिक उपेक्षित, शोषित और पीडित थी । उसका दोहरा शोषण किया जाता था । इसलिए बाबासाहब दलित स्त्रियों को शिक्षित होने, साफ सुथरा रहने तथा पुरानी सडी-गली परंपराओं को त्यागने का महत्त्वपूर्ण संदेश देते थे । अस्पृश्यता निर्मूलन के आंदोलन में वे दलित स्त्रियों को संगठित होने के लिए प्रेरित करते थे । वे कहते थे कि, ''स्त्रियों के संगठन पर मेरा बहुत विश्वास है । यदि उन पर विश्वास रखा जाए तो वे समाज सुधार के लिए क्या कर सकती है, इसे मैं अच्छी तरह से जानता हूँ ।''[८] इस तरह वे स्त्रियों के संगठन को भी महत्त्व देते थे । वे स्त्रियों को अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि, ''स्त्रियों को अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु लडने के लिए अपने मन की दुर्बलता को छोडकर अपनी कमर कसनी चाहिए, तो ही उनका सुधार और उन्नति हो सकती है ।''[९]

इस तरह महात्मा गौतम बुद्‌ध, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले तथा डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी जैसे महापुरूषों ने नारी उत्थान का जो कार्य किया है, वह भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जानेवाला कार्य बन गया है । आज समाज में स्त्रियों को जो प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है, स्वतंत्रता, समता तथा सम्मान प्राप्त हुआ है, उसके प्रमुख आधारस्तंभ यही लोग हैं । इसलिए आज भारत की हर शिक्षित नारी को उनका ऋणी होकर उनके इस कार्य को आगे बढाने की आवश्यकता है । लेकिन दुर्भाग्यवश यह कहना पड रहा है कि आज की शिक्षित नारी अपने इस कर्तव्य से मुख मोड पर पुनःउसी रूढि परंपरांओ में जकडने में ही धन्यता मान रही है ।

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI
Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati

संदर्भ सूची :
१. मनुस्मृति, अध्याय ३, श्लोक ५६,
२. भगवान बुद्ध आणि त्यांचा धम्म - डॉ.भीमराव आंबेडकर, अनु.-घनःशाम तळवटकर, प्राचार्य, म.भि. चिटणीस, शां, शं. रेगे प्रकाशन : सिद्धार्थ प्रकाशन, पीपल्स एज्युकेशन सोसायटी, फोर्ट, मुंबई - १, संस्करण-सत्रह, २००४, पृ.१५१
३. भारत में सामाजिक क्रांति के पथ प्रदर्शक - ज्योतिबा फुले, डॉ. हेमलता आचार्य, सम्यक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, २०१५ पृ.२५८
४. वही, पृ. ८८
५. वही, पृ. ९१
६. बोल महामानवाचे - अनुवाद आणि संपादन - डॉ.नरेंद्र जाधव, (खंड-१), प्रकाशन : ग्रंथाली प्रकाशन, माटुंगा, मुंबई - १६, संस्करण : २४ ऑक्टोबर, २०१२, पृ.३१८
७. वही, पृ. ३१२
८. वही, पृ. ३१८
९. वही, पृ. ३१९

***

TULJARAM CHATURCHAND COLLEGE BARAMATI
Principal
Tuljaram Chaturchand College
Baramati